Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LI (51), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

जैनेंद्र एवं अज्ञेय की मनोविश्लेषणवादी कहानियों की शिल्पगत विशेषताओं का तुलनात्मक अध्ययन

महीपाल दान* डॉ. राज बाला**

* शोधार्थी, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय जयपुर (राज.) भारत
** शोध निर्देशिका, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय जयपुर (राज.) भारत

शोध सारांश –हिंदी कहानी साहित्य के विकास में मनोविश्लेषणवादी प्रवृत्ति ने अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस प्रवृत्ति ने कहानी को बाह्य घटनाओं, सामाजिक यथार्थ और आदर्शवादी दृष्टिकोण से हटाकर मानव-मन की जटिलताओं, अंतर्द्वंद्वों, कुंठाओं, दमित इच्छाओं और अचेतन मन की गतिविधियों की ओर उन्मुख किया। जैनेंद्र कुमार एवं अज्ञेय हिंदी के ऐसे दो प्रमुख कथाकार हैं जिन्होंने मनुष्य के आंतरिक जीवन को अपनी रचनाओं का केंद्र बनाया। प्रस्तुत शोध-पत्र में दोनों कहानीकारों की मनोविश्लेषणवादी कहानियों की शिल्पगत विशेषताओं का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

शब्द कुंजी – मनोविश्लेषणवाद, जैनेंद्र, अज्ञेय, कथाशिल्प, पात्र-योजना, भाषा-शैली।

प्रस्तावना – आधुनिक हिंदी कहानी का विकास अनेक साहित्यिक धाराओं के प्रभाव से हुआ है। इनमें मनोविश्लेषणवाद एक महत्वपूर्ण धारा है। सिग्मंड फ्रायड द्वारा प्रतिपादित मनोविश्लेषण सिद्धांत ने साहित्यकारों को मानव-मन के अज्ञात क्षेत्रों की ओर उन्मुख किया। इसके परिणामस्वरूप साहित्य में व्यक्ति की मानसिक जटिलताओं, अचेतन मन, दमित इच्छाओं तथा अंतर्द्वंद्वों का चित्रण आरंभ हुआ।

हिंदी कहानी में जैनेंद्र कुमार तथा अज्ञेय ने इस प्रवृत्ति को विकसित किया। उन्होंने कहानी को केवल सामाजिक यथार्थ के चित्रण तक सीमित न रखकर व्यक्ति के आंतरिक जीवन का सूक्ष्म विश्लेषण प्रस्तुत किया।नामवर सिंह के अनुसार 'जैनेंद्र ने हिंदी कहानी को घटना से अधिक मन:स्थिति की ओर उन्मुख किया।'[1]

मनोविश्लेषणवाद : अवधारणा एवं स्वरूप– मनोविश्लेषणवाद का प्रवर्तन सिग्मंड फ्रायड ने किया। उन्होंने मानव-मन को तीन भागों में विभाजित कियाकृचेतन, अचेतन, अवचेतन। फ्रायड के अनुसार मनुष्य की दमित इच्छाएँ उसके व्यवहार को नियंत्रित करती हैं। बाद में कार्ल युंग तथा अल्फ्रेड एडलर ने भी मनोविज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया।साहित्य में मनोविश्लेषणवाद का उद्देश्य व्यक्ति के अंतर्मन की गतिविधियों को समझना है। हिंदी कहानी में इस प्रवृत्ति को सबसे अधिक जैनेंद्र और अज्ञेय ने अपनाया।

जैनेंद्र की मनोविश्लेषणवादी कहानियों की शिल्पगत विशेषताएँ:

(क) कथावस्तु– जैनेंद्र की कहानियों की कथावस्तु मनोवैज्ञानिक है। उनकी कहानियों में घटनाओं की अपेक्षा मन:स्थितियों का अधिक महत्व है।उनकी कहानी 'पत्नी' दाम्पत्य जीवन की मानसिक जटिलताओं को चित्रित करती है। कहानी की नायिका पति के प्रति प्रेम और असंतोष दोनों का अनुभव करती है।कहानी 'पाजेब' बाल-मनोविज्ञान का उत्कृष्ट उदाहरण है। पाजेब के खोने की साधारण घटना बालक के भीतर अपराध-बोध, भय तथा मानसिक तनाव उत्पन्न करती है।देवराज उपाध्याय लिखते हैं 'जैनेंद्र की कहानियों में घटना नहीं, घटना से उत्पन्न मनोभाव महत्वपूर्ण हो जाते हैं।'[2]

(ख) पात्र-योजना– जैनेंद्र के पात्र अंतर्मुखी हैं। वे समाज से अधिक स्वयं से संघर्ष करते हैं।उनके पात्रों की प्रमुख विशेषताएँ आत्मसंघर्ष,अहं-बोध, अपराध-बोध, प्रेम एवं दाम्पत्य तनाव, भावनात्मक जटिलता।'पत्नी' की नायिका,'पाजेब' का बालक तथा 'बिल्ली का बच्चा' की शरबती ऐसे ही पात्र हैं।प्रेमचंद ने लिखा है 'कहानी का उद्देश्य किसी एक चरित्र का उद्घाटन करना है।'[3]जैनेंद्र ने इस सिद्धांत को मनोवैज्ञानिक धरातल पर विकसित किया।

(ग) भाषा-शैली – जैनेंद्र की भाषा आत्मविश्लेषणात्मक है। उनकी भाषा बाहरी घटनाओं का वर्णन नहीं करती बल्कि मन:स्थितियों को अभिव्यक्त करती है।उनकी भाषा की विशेषताएँ सांकेतिकता, व्यंजनात्मकता, आत्मसंवाद, दार्शनिकता, भावात्मकता। 'मैं उन्हें समझ नहीं पाती।' यह वाक्य केवल दाम्पत्य संबंधों की दूरी ही नहीं बल्कि मानसिक अलगाव को भी व्यक्त करता है।नामवर सिंह के अनुसार 'जैनेंद्र ने हिंदी कहानी को मन:स्थिति की भाषा प्रदान की।'[3]

अज्ञेय की मनोविश्लेषणवादी कहानियों की शिल्पगत विशेषताएँ:

(क) कथावस्तु – अज्ञेय की कथावस्तु आधुनिक व्यक्ति के अकेलेपन, अस्तित्वगत संकट, मानसिक तनाव तथा अजनबीपन पर आधारित है।उनकी कहानियों मेंअस्तित्व-बोध, भय,संत्रास, अकेलापन, आत्मसंघर्ष का चित्रण मिलता है।उन पर फ्रायड, युंग तथा अस्तित्ववादी चिंतकों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।

(ख) पात्र-योजना – अज्ञेय के पात्र चिंतनशील एवं बौद्धिक हैं। वे बाहरी संघर्षों की अपेक्षा आंतरिक संघर्षों से गुजरते हैं।उनके पात्रों की विशेषताएँ- आत्मचेतना,अकेलापन अस्तित्वगत संकट, मानसिक तनाव, व्यक्तिवाद। उनके पात्र स्वयं की पहचान की खोज में निरंतर संघर्षरत रहते हैं।

(ग) भाषा-शैली – अज्ञेय की भाषा अत्यंत कलात्मक, प्रतीकात्मक तथा बिंबात्मक है। उनकी भाषा की प्रमुख विशेषताएँ, प्रतीकात्मकता,

सांकेतिकता, बिंबात्मकता,चेतना–प्रवाह शैलीअंतर्मन का एकालाप।अज्ञेय की भाषा पाठक से सक्रिय सहभागिता की अपेक्षा करती है।

संवाद–योजना – संवाद कहानी का महत्वपूर्ण तत्व है।श्यामसुंदर दास के अनुसार 'संवाद पात्रों के चरित्र को उद्घाटित करने का सबसे सशक्त साधन है।'[4] जैनेंद्र के संवादभावात्मक,आत्मविश्लेषी, मनोवैज्ञानिक हैं।अज्ञेय के संवादबौद्धिक, दार्शनिक, सांकेतिकहैं।

भाषा एवं शैली का तुलनात्मक अध्ययन– कहा जा सकता है कि जैनेंद्र और अज्ञेय की मनोविश्लेषणवादी कहानियों की भाषा एवं शैली में स्पष्ट भिन्नता दिखाई देती है। जैनेंद्र की भाषा सरल, भावात्मक तथा प्रत्यक्ष है, जबकि अज्ञेय की भाषा प्रतीकात्मक, कलात्मक एवं सांकेतिक है। जैनेंद्र की शैली आत्मविश्लेषणात्मक एवं अंतर्मुखी है, जो पात्रों के मानसिक द्वंद्व को सीधे रूप में प्रस्तुत करती है, जबकि अज्ञेय की शैली प्रयोगवादी और अस्तित्ववादी है, जिसमें प्रतीकों तथा दार्शनिक चिंतन के माध्यम से मानव जीवन और अस्तित्व संबंधी प्रश्नों को अभिव्यक्ति मिलती है। जैनेंद्र के संवाद मनोवैज्ञानिक हैं, जबकि अज्ञेय के संवाद दार्शनिक एवं वैचारिक हैं। इस प्रकार दोनों कथाकारों ने मनोविश्लेषणवादी कहानी को अपनी–अपनी विशिष्ट भाषा, शैली और दृष्टिकोण से समृद्ध किया है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि– दोनों कहानीकारों पर फ्रायड का प्रभाव दिखाई देता है।जैनेंद्र ने प्रेम, अहं, दाम्पत्य, अपराध–बोधको चित्रित किया वहीं अज्ञेय ने अकेलापन, अस्तित्व–संकट, भय, अजनबीपनको अभिव्यक्ति दी।

शिल्पगत विशेषताओं का तुलनात्मक अध्ययन:

1. **कथानक:** जैनेंद्र का कथानक अत्यंत सीमित है जबकि अज्ञेय का कथानक प्रतीकात्मक एवं प्रयोगशील है।
2. **पात्र:** जैनेंद्र के पात्र भावनात्मक हैं जबकि अज्ञेय के पात्र बौद्धिक हैं।
3. **भाषा:** जैनेंद्र की भाषा सरल एवं आत्मविश्लेषणात्मक है। अज्ञेय की भाषा प्रतीकात्मक है।
4. **शिल्प:** जैनेंद्र पारंपरिक मनोवैज्ञानिक शिल्प अपनाते हैं जबकि अज्ञेय प्रयोगवादी शिल्प का उपयोग करते हैं।

निष्कर्ष – निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि जैनेंद्र एवं अज्ञेय हिंदी की मनोविश्लेषणवादी कहानी परंपरा के दो महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। जैनेंद्र ने मानव–मन की भावनात्मक जटिलताओं को अभिव्यक्ति दी जबकि अज्ञेय ने आधुनिक व्यक्ति के अस्तित्वगत संकट को स्वर प्रदान किया।जैनेंद्र की कहानियाँ दाम्पत्य, प्रेम, अहं तथा मानसिक संघर्षों की कहानियाँ हैं जबकि अज्ञेय की कहानियाँ अकेलेपन, अजनबीपन और अस्तित्व–बोध की कहानियाँ हैं।दोनों कहानीकारों ने हिंदी कहानी को बाह्य घटनाओं से हटाकर आंतरिक यथार्थ की ओर उन्मुख किया और हिंदी कहानी को नवीन शिल्प एवं मनोवैज्ञानिक गहराई प्रदान की।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. नामवर सिंह, कहानी : नई कहानी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. 62।
2. देवराज उपाध्याय, आधुनिक हिंदी कथा साहित्य और मनोविज्ञान, राजकमल प्रकाशन, पृ. 118।
3. प्रेमचंद, कुछ विचार, सरस्वती प्रेस, पृ. 42।
4. नामवर सिंह, दूसरी परंपरा की खोज, राजकमल प्रकाशन, पृ. 91।
5. श्यामसुंदर दास, साहित्यालोचन, इंडियन प्रेस, पृ. 215।
6. गुलाबराय, काव्य के रूप, आत्माराम एंड संस, पृ. 127।
7. रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, पृ. 401।
8. बच्चन सिंह, आधुनिक हिंदी आलोचना के बीज शब्द, वाणी प्रकाशन, पृ. 88।
9. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, हिंदी कहानी : स्वरूप और संवेदना, पृ. 176।
10. अज्ञेय, संपूर्ण कहानियाँ, भारतीय ज्ञानपीठ, पृ. 154।

****